1

Lecture No:- 49.

Online class
Date - 21/5/2020
Time - 10:10 to 10:50 A.M

Topic,

(II) Truths.

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy
B.A Part - I
Paper - (S.)
A.M.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans:- महात्मा बुद्ध ने बुद्धत्व की प्राप्ति के बाद सर्वप्रथम काशी के निकट सारनाथ में अपना प्रवचन दिया जिसका संकलन धर्म चक्र प्रवर्तन सूत्र में मिलता है। यही पर

इन्होंने चार आर्य तत्वों का अमृत संदेश मानव को दिया। इनके इन्हीं चार आर्य सत्यों में इनके शिक्षण का सारांश निहित है। इन चार आर्य सत्यों में प्रथम दुःख के स्वरूप तथा दूसरा आर्य सत्य दुःख के कारणों का विवेचन उपस्थित करते हैं।

महात्मा बुद्ध के अनुसार संसार का समस्त कार्य - व्यापार दुःखमय है।

P.T.O.

②

मानव तथा मानवेतर जीवन सभी दुःख से परिपूर्ण है। (सार्वप्रथम) सर्वप्रथम दुःखम। जन्म जरा, रोग मृत्यु, शोक, क्लेश, आशंका, नैराश्य सभी आसक्ति से उत्पन्न है। यानी (आसिम) बुद्ध के बारे में बतलाया

अतः ये सभी दुःख है, इसके अतिरिक्त वे सभी बात भी दुःख है जिन्हें हम सुख मानते हैं, विषय भोग, इन्द्रिय सुख - ऐश्वर्य, विलास

मानव सम्मान, सन्तति, धन सभी दुःख है क्योंकि ये आसक्ति से उत्पन्न होते हैं, संक्षेप में उन्होंने रूप (Body), वेदना (Feeling), संज्ञा, संस्कार और विज्ञान (Reason) इन पाँच उपादान स्कन्धों को दुःख कहा है।

पाँचों स्कन्धों का ज्ञान प्रथम आर्य सत्यों का ज्ञान है। पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि ये चारों महाभूत (रूप)

P.T.O.

(3)

कहते हैं। वस्तुओं के संसर्ग में आने पर सुख या दुःख की जो अनुभूति होती है, उसे वेदना कहते हैं।

रूपों और संस्कारों का जो प्रतिबिम्ब हमारे मन में बना रहता है। उसका नाम संस्कार है। पिछले संस्कारों के कारण हमारे मन में बना रहता है, मन में जो यह व यह वही वस्तु है, का भाव उत्पन्न होता है। उसी को संज्ञा कहते हैं।

चेतना या मन ही विज्ञान कहलाता है।

तब पंचस्कंध ही दुःख हों तो समस्त संसार को ही दुःखमय कहा ~~जायगा~~, जाएगा। दुःख को अपने मूल आधार मानने के कारण ही बौद्ध बौद्ध मतों को ही निराशावादी कहते हैं। वाह्यमय जीवन के अंधकारमय (मय है) वह को ही और भी अंधकार में देखता है।

द्वितीय सत्य में महात्मा बुद्ध ने दुःख का कारण ~~बतलाकर~~ बतलाकर

ef. c. EN. D.